

SWAMAAN / SWAROOP / ANUBHAVI MOORT BANO

December 22, 2013

हम ज्ञानी और योगी तू आत्माएँ, सदा मर्यादा पुरुषोत्तम, सर्व खज़ानों को सफल करने वाले सफलतामूर्त, व्यर्थ को समर्थ में परिवर्तन करने वाले, कमज़ोर संकल्पों की जाल को समाप्त कर परतन्त्रता के बन्धन से मुक्त होने वाले, बाप के आज्ञाकारी, सदा श्रीमत पर चलने वाले नष्टोमोहा स्मृति स्वरूप नम्र और निर्भय स्वतन्त्र मास्टर सर्वशक्तिमान बाकच्चे हैं...

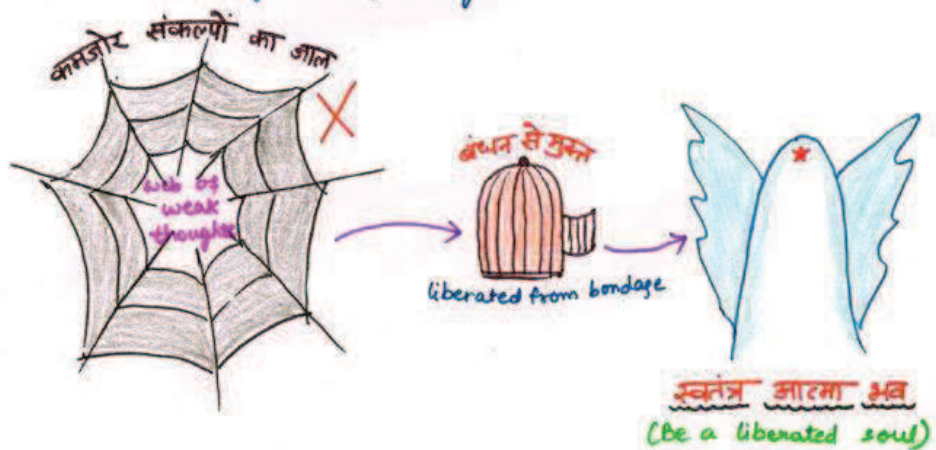
We, the gyani and yogi souls, the most elevated beings following the highest code of conduct, who use all treasures in a worthwhile way, are the embodiments of success who transform the wasteful into powerful... we are the humble and fearless obedient children of the Father who constantly follow shrimat... we are the destroyers of attachment and the embodiments of remembrance, and the master almighty authorities who finish the web of weak thoughts and become liberated from the bondage of dependency...

December 22, 2013

आज का वन्दन (TODAY'S BLESSING)

कमज़ोर संकल्पों की जाल को समाप्त कर परतन्त्रता के बन्धन से मुक्त होने वाले स्वतन्त्र आत्मा भव।

May you be a liberated soul who finishes the web of weak thoughts and becomes liberated from the bondage of dependency.



Om Shanti Divine Angels!!!

Points to Churn from the Murli of December 22, 2013 (Revised 29-05-1977)

Praise of Baba:

The Ocean of Knowledge, the Incorporeal Purifier, the Supreme Father, and the Supreme Soul Shiv Baba is.... My Baba...Sweet Baba...Lovely Baba...Kind-hearted Baba...Compassionate Baba...the True Father...the True Teacher...the Unlimited Father... the Almighty Authority...the Truth, the Living Being, the Blissful One and the Seed... the Bestower of Salvation... Knowledge-full...

Why do obstructions come, due to which you change from intense effort-makers to being simply effort-makers? The main thing is that the majority of you have many storms of [waste thoughts](#). The cause of having waste thoughts is a lack of pure thoughts, pure ideas and the treasures of knowledge. Even when you do get them, you don't know how to use them or accumulate them. They don't increase because you don't know the right way to use them. To have heard the knowledge means to have received it, but you use it all up at that time by experiencing temporary happiness and power.

You constantly experience yourself to be empty of the treasures of knowledge and powers because you lack the power to imbibe and are unable to increase them by using the right method. This is why you are unable to be constantly powerful and are not able to remain constantly cheerful. [The main method for is to have a clean and pure intellect and an honest heart](#). The basis of having a pure intellect is to know the Father with the intellect and to surrender your intellect to the Father. [To surrender means to finish the consciousness of 'mine'](#). To surrender a shudra intellect means to give it away. Together with giving it away you also receive a divine intellect. [To give is to receive](#).

To let go of your rights resulting from the consciousness of 'mine' is known as surrender. This is known as the stage of being free from attachment. The reason for not being an embodiment of remembrance, for having waste thoughts and for becoming unhappy and a servant is that you are not free from being attached to the consciousness of 'mine'. There is a lot of expansion of the consciousness of "mine".

The basis of finishing waste thoughts is to [relinquish being a householder](#). Whether you are a kumar or a kumari, to think in terms of 'my nature', 'my sanskar', 'my intellect' is the expansion of a householder. When you have surrendered yourself, the Father's nature is your nature, the Father's sanskars are your sanskars. Just as the Father's intellect is divine, so your intellect should be the same.

There are stages of attachment. One is subtle attachment which can only be recognised by being stable in the subtle soul-conscious stage. The other is the gross form of attachment, which can be easily recognised. There's also a great deal of expansion of subtle attachment. Without attachment, an intellect would not be attracted or subservient to anything. [The main cause of waste thoughts is attachment](#).

The other reason for waste thoughts is that, from being obedient, you become disobedient. Check yourself very carefully, for only then will you become free from waste thoughts. Throughout the day, let the intellect remain busy in the pure activities that the Father has given you to do. The activity of the intellect is to have pure thoughts. The activity of words is to speak the knowledge you have heard from the Father. The activity of deeds is to perform every deed as a karma yogi, to live as lovingly and detached as a lotus, to reveal the Father's elevated task through your every deed and to perform every deed as a divine act.

[To have pure activities is known as being a trustee](#), not a householder. the basis of freedom is pure activity. The Shaktis who have weapons are the ones who are worshipped. To be worthy of being worshipped means to have all your weapons. To be a householder means to be caught up in a

web. To be a trustee means to be free. Constantly have the awareness that you are worthy of being worshipped.

Every thought should be of remembrance of the Father or of service. Remind others of the Father through your every word and give others the treasures you have received. You have to reveal the divine activity of the Father through your activity. When you forget remembrance and service, you open the gates for Maya to enter. Brahmin life is remembrance and service. Through this, you will remain constantly safe, happy and content.

The way to recognise whether it is shrimat or manmat is that **if it is shrimat your mind will never become discontent**; there will not be any type of upheaval in your mind. By following shrimat, you will have natural happiness. **The mind of those who follow manmat will fluctuate**. Those who follow shrimat will be constantly light and happy. From this, you can understand whether you are following shrimat or manmat. This is your thermometer.

Constantly check and change. **To check means to change**. You need both the powers of checking and changing. **You will have the power to change when you have the power to tolerate**. When the line of the intellect is clear, **you will have the power to recognise**.

ॐ शान्ति दिव्य फरिश्ते !!!

विचार सागर मंथन: December 22, 2013 (Revised 29-05-1977)

बाबा की महिमा:

ज्ञान के सागर पतित पावन निराकार परमपिता परमात्मा शिव बाबा हैं...मेरा बाबा... मीठा बाबा...प्यारा बाबा... दयालु बाबा...कृपालु बाबा... सत बाप...सत टीचर...सत गुरु... बेहद का बाप... सर्वशक्तिमान...सत चित आनंद स्वरूप...बीजरूप...सदगति दाता... नॉलेजफुल...

तीव्र पुरुषार्थी से पुरुषार्थी बननेका कारण ? मूल बात मैजारिटी के सामने **व्यर्थ संकल्पों** का तूफान ज्यादा है । व्यर्थ संकल्प आने का आधार है, शुभ संकल्प अर्थात् शुद्ध विचार, ज्ञान के खज़ाने की कमी । मिलते हुए भी यूज़ करना नहीं आता है और जमा करना नहीं आता है या तो विधि नहीं आती, इस कारण वृद्धि नहीं होती । सुना अर्थात् मिला, लेकिन उसी समय अल्पकाल की खुशी वा शक्ति का अनुभव करके, खत्म कर देते हैं ।

धारणा शक्ति की कमज़ोरी होने कारण, विधि से वृद्धि न करने के कारण सदा स्वयं को ज्ञान और शक्तियों के खज़ाने से खाली अनुभव करते हैं, इसलिए निरन्तर शक्तिशाली नहीं बन पाते हैं । **जमा करने का मुख्य साधन है – स्वच्छ अर्थात् प्योर बुद्धि और सच्ची दिल** । प्योर बुद्धि का आधार है बुद्धि द्वारा बाप को जान, बुद्धि को भी बाप के आगे समर्पण करना । **समर्पण करना अर्थात् मेरापन मिटाना ।**

शूद्रपन की बुद्धि समर्पण करना अर्थात् देना । तो देने के साथ दिव्य बुद्धि का लेना है । देना ही लेना है । मेरेपन का अधिकार छोड़ना, इसी को ही समर्पण कहा जाता है । इसी को ही नष्टोमोहा स्टेज कहा जाता है । स्मृति स्वरूप न होने का कारण वा व्यर्थ संकल्प चलने का कारण, उदास वा दास बनने का कारण मेरेपन से नष्टोमोहा नहीं हैं । मेरेपन का विस्तार बहुत है ।

व्यर्थ संकल्प मिटाने का आधार है, गृहस्थीपन छोड़ना । चाहे कुमारी है वा कुमार है लेकिन, मेरा स्वभाव, मेरा संस्कार, मेरी बुद्धि यह विस्तार गृहस्थीपन है । जो समर्पण हो गए तो जो बाप का स्वभाव, वह आपका स्वभाव । जो बाप का संस्कार, वह आपके संस्कार । जैसे बाप की दिव्य बुद्धि, वैसे आपकी ।

लगाव की भी स्टेजेस हैं । एक है सूक्ष्म लगाव, जिसको सूक्ष्म आत्मिक स्थिति में स्थित होकर ही जान सकते हैं । दूसरे हैं स्थूल रूप के लगाव, जिसको सहज जान सकते हो । सूक्ष्म लगाव का भी विस्तार बहुत है । बिना लगाव के, बुद्धि की आकर्षण वहाँ जा नहीं सकता । व्यर्थ संकल्प का मूल कारण है – लगाव ।

व्यर्थ संकल्पों का दूसरा कारण है आज्ञाकारी से अवज्ञाकारी बन जाते हो । चेकिंग अच्छी तरह होनी चाहिए, तब व्यर्थ संकल्पों की निवृत्ति हो सकती है । सारा दिन बाप द्वारा जो शुद्ध प्रवृत्ति मिली हुई है, बुद्धि की प्रवृत्ति है शुद्ध संकल्प करना, वाणी की प्रवृत्ति है जो बाप द्वारा सुना वह सुनाना, कर्म की प्रवृत्ति है कर्मयोगी बन हर कर्म करना, कमल समान न्यारा और प्यारा बन रहना, हर कर्म द्वारा बाप के श्रेष्ठ कार्यों को प्रत्यक्ष करना हर कर्म चरित्र रूप से करना । पवित्र प्रवृत्ति को ट्रस्टी कहेंगे न कि गृहस्थी । निवृत्ति का आधार पवित्र प्रवृत्ति है ।

शस्त्रधारी शक्तियों का ही पूजन होता है । पूज्य अर्थात् शस्त्रधारी । गृहस्थी बनना अर्थात् जाल में फँसना । ट्रस्टी अर्थात् मुक्त । सदा यही स्मृति रखो कि हम पूज्य हैं ।

हर संकल्प बाप की याद वा सेवा । ऐसे ही हर बोल द्वारा बाप की याद दिलाना या दिया हुआ खज़ाना दूसरों को देना । कर्म द्वारा भी बाप के चरित्रों को सिद्ध करना । अगर याद और सेवा को भूलते तो माया का गेट खोल देते हैं । ब्राह्मण जीवन ही है याद और सेवा । इससे सदा सेफ़ रहेंगे, खुश रहेंगे, सन्तुष्ट रहेंगे ।

श्रीमत और मनमत को परखने का साधन यही है कि अगर श्रीमत पर कदम होगा तो कभी भी अपना मन असन्तुष्ट नहीं होगा । मन में किसी प्रकार की हलचल नहीं होगी । स्वतः श्रीमत पर चलने से नैचुरल खुशी रहेगी । मनमत पर चलने वाले के मन में हलचल होगी । श्रीमत पर चलने वाला सदा हल्का और खुश होगा । इससे परख सकते हो कि श्रीमत पर हूँ या मनमत पर हूँ । यह थर्मामीटर है ।

सदा चैकिंग और चेन्ज । चैकिंग का अर्थ है चेन्ज करना । चैकिंग और चेन्ज यह दोनों ही शक्तियाँ चाहिए । चेन्ज होने की शक्ति तब आएगी जब सहनशक्ति होगी । बुद्धि की लाइन क्लीयर होने से परख शक्ति आयेगी ।

22/12/13 Om Shanti Om Shanti Avyakt BapDada Madhuban 29/05/77

Obstructions in the speed of effort and their resolution

Blessing: May you be a liberated soul who finishes the web of weak thoughts and becomes liberated from the bondage of dependency!

Any bondage of dependency is a web of the waste thoughts of your own mind. This web is in the form of questions. When the question arises, "I don't know what is going to happen. Perhaps it would be like this", then it becomes like a web. However, confluence-aged Brahmins have only one powerful thought: Whatever happens will be beneficial, elevated and the best of all. Finish the web with this powerful thought and you will become free from bondage and a liberated soul.

Slogan: The practical form of a gyani and yogi soul is humility and fearlessness.

22-12-13 प्रातः मुरली "अव्यक्त बापदादा" रिवाइज 29-05-77 मधुवन

"पुरुषार्थ की रफ़्तार में रुकावट का कारण और उसका निवारण"

वरदान:- कमज़ोर संकल्पों की जाल को समाप्त कर परतन्त्रता के बन्धन से मुक्त होने वाले स्वतन्त्र आत्मा भव !

परतन्त्रता का बन्धन अपने ही मन के व्यर्थ कमज़ोर संकल्पों की जाल है | यह जाल क्वेश्चन के रूप में होती है | जब क्वेश्चन उठता है – पता नहीं क्या होगा, ऐसे तो नहीं होगा.....तो जाल बन जाती है | लेकिन संगमयुगी ब्राह्मणों का एक ही समर्थ संकल्प हो कि जो होगा वह कल्याणकारी होगा, श्रेष्ठ वा अच्छे से अच्छा होगा – इस समर्थ संकल्प से जाल को समाप्त कर दो तो बन्धनमुक्त स्वतन्त्र आत्मा बन जायेंगे |

स्लोगन:- ज्ञानी और योगी तू आत्मा का प्रैक्टिकल स्वरूप नम्रता और निर्भयता है |

